न्यूज़ टुडे

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2024-25 जारी की

रिपोर्ट के अनुसार, **भारत में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क** है, जो लगभग **63.45 लाख किलोमीटर** लंबा है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **राजमार्ग नेटवर्क:** राष्ट्रीय राजमार्ग (NH) नेटवर्क 2014 में **91,287 किमी.** था। इसमें वर्तमान में **60% की वृद्धि** हुई है, जो बढ़कर **1.46 लाख किमी.** हो गया है।
  - 2014-15 में राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण की गति **12.1 किमी/दिन** थी। यह 2023-24 में **2.8 गुना बढ़कर 33.8 किमी/दिन** हो गई है।
- **पूंजीगत व्यय:** सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय का पूंजीगत व्यय 2013-14 से **5.7 गुना बढ़कर 2023-24 में 3.01 लाख करोड़ रुपये** हो गया था।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (InvIT):** InvIT मोड के तहत **25,900 करोड़ रुपये** जुटाए गए हैं।
- **राज्य सड़क परिवहन उपक्रम (SRTUs):** 58 SRTUs ने लगभग **30,000 करोड़ रुपये** का समेकित निवल घाटा दर्ज किया है, जो तीन वर्षों में घाटे में **68% की वृद्धि** है।
  - **इसके लिए जिम्मेदार कारक हैं-** बेड़े का कम उपयोग, ईंधन की बढ़ती लागत और मुफ्त में बस यात्रा से जुड़ी योजनाएं आदि।
- **नवीन प्रौद्योगिकियां:**
  - **कृषि अपशिष्ट से प्राप्त बायो-बाइंडर्स:** कृषि अपशिष्ट से प्राप्त बायो-बाइंडर्स का उपयोग पेट्रोलियम-आधारित बाइंडर्स के विकल्प के रूप में बिटुमिन्स आधारित सड़क निर्माण में किया जा सकता है।
  - **अल्ट्रा-हाई-परफॉरमेंस फाइबर रिइंफोर्समेंट कंक्रीट (UHPFRC):** इसका उपयोग पुल निर्माण में पुलों की मजबूती और उनकी भार वहन क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है।
  - **ग्राफीन संशोधित डामर (GIPAVE):** इसका उपयोग डामर निर्मित फुटपाथों की गुणवत्ता बढ़ाने और उनकी दीर्घकालिकता में सुधार करने के लिए किया जाता है।
  - **गैप-ग्रेडेड रबराइज्ड बिटुमेन (GGRB):** यह बिटुमेन मिश्रण में रबड़ के कणों को शामिल करता है।
  - **अन्य सामग्रियां:** जियो-सिंथेटिक मटेरियल जिसमें कॉयर/ जूट, स्टील व आयरन स्लैग, कॉपर स्लैग, जिंक स्लैग, बायो-बिटुमेन, बायो-सीमेंट, रीसायकल ग्लास एग्रीगेट, ग्राफीन एनहांस्ड कंक्रीट, सिलिका-फ्यूम आदि शामिल हैं।

पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की बैठक में भारत की आर्थिक संवृद्धि में पश्चिमी क्षेत्र के योगदान पर चर्चा हुई

पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद, **राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956** के तहत देश में स्थापित **पांच क्षेत्रीय परिषदों में से एक है।** इसमें **गोवा, गुजरात व महाराष्ट्र राज्य तथा केंद्र शासित प्रदेश दमन-दीव और दादरा एवं नगर हवेली** शामिल हैं।

देश के विकास में पश्चिमी क्षेत्र का योगदान

- यह क्षेत्र **भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 25% का योगदान** देता है, जो केवल **दक्षिणी क्षेत्र** से पीछे है। दक्षिणी क्षेत्र का योगदान लगभग **30%** है।
  - **उत्तरी, मध्य और पूर्वी क्षेत्र** भारत की GDP में क्रमशः लगभग **18.5%, 13.6% तथा 12.5%** का योगदान देते हैं। ये आंकड़े **क्षेत्रीय असमानता को उजागर** करते हैं।
- विश्व के साथ **भारत के व्यापार का आधे से अधिक हिस्सा** इसी क्षेत्र से होता है। इसके अलावा, पश्चिमी क्षेत्र **उत्तरी और मध्य क्षेत्रों के लिए वैश्विक व्यापार हेतु प्रवेश द्वार** के रूप में भी कार्य करता है।

क्षेत्रीय असमानता के लिए उत्तरदायी कारक

- **ऐतिहासिक:** ब्रिटिश नीतियों में संसाधन संपन्न क्षेत्रों (जैसे कोलकाता, मुंबई और चेन्नई) को प्राथमिकता दी गई थी।
- **भौगोलिक:** कुछ क्षेत्रों में बंदरगाह व कच्चे माल जैसे संसाधनों की उपलब्धता है, तो वहीं कुछ क्षेत्रों (जैसे हिमालयी व उत्तरी-पूर्वी राज्यों) में दुर्गम इलाके हैं व आपदाओं का जोखिम बना रहता है। यह भी असमान संवृद्धि का एक कारक है।
- **आर्थिक:** कुछ क्षेत्रों में परिवहन, बिजली, प्रौद्योगिकी जैसी बुनियादी संरचनाओं का अभाव है। इसके अलावा, कुछ क्षेत्र अभी भी प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों पर ही पूरी तरह से निर्भर हैं।
- **प्रशासन:** उद्योग जगत विकसित राज्यों को पसंद करते हैं, जहां दक्ष प्रशासन प्रणाली एवं नीतिगत निरंतरता मौजूद होती है।

क्षेत्रीय असमानताओं को खत्म करने की रणनीतियां

- **आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP):** इसका उद्देश्य देश भर के **112 सबसे कम विकसित जिलों** को तेजी से बदलना है।
  - ADP की तर्ज पर **आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ABP)** शुरू किया गया है।
- पी.एम. गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान, भारतमाला, सागरमाला आदि के माध्यम से देश में **अवसंरचना का विकास** करना।
- नीति आयोग के माध्यम से **सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद** को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- सुधारों को बढ़ावा देने हेतु **ऋणों के रूप में राज्य सरकारों को विकास निधियां** प्रदान की जाती हैं। साथ ही, पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता भी प्रदान की जाती है।

एडवोकेसी संस्था एक्सेस नाउ ने 'इंटरनेट शटडाउन रिपोर्ट, 2024' जारी की

रिपोर्ट के अनुसार, 2024 में वैश्विक इंटरनेट शटडाउन की संख्या रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई। सरकार द्वारा लागू किए गए शटडाउन के मामले में लोकतांत्रित देशों में भारत शीर्ष पर है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर:

- 2024 में 54 **देशों में कुल 296 इंटरनेट शटडाउन्स** दर्ज किए गए थे, जो 2023 में हुए 283 शटडाउन्स से अधिक हैं।
  - **म्यांमार** (85 शटडाउन्स), **भारत** (84), **पाकिस्तान** (21), और **रूस** (19) का कुल योगदान 71% था।
- **मानवाधिकार संबंधी चिंताएं:** इंटरनेट शटडाउन के 72 मामले गंभीर मानवाधिकार हनन से जुड़े थे। इनमें युद्ध अपराध, पुलिस क्रूरता और हवाई हमले शामिल थे।
- **भारत-विशिष्ट निष्कर्ष:** भारत में **84 शटडाउन (किसी भी लोकतंत्र में सबसे अधिक)** दर्ज किए गए थे। इससे 16 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश प्रभावित हुए थे।
  - **इंटरनेट शटडाउन के प्राथमिक कारण:** विरोध, चुनाव, सांप्रदायिक हिंसा और परीक्षाएं।

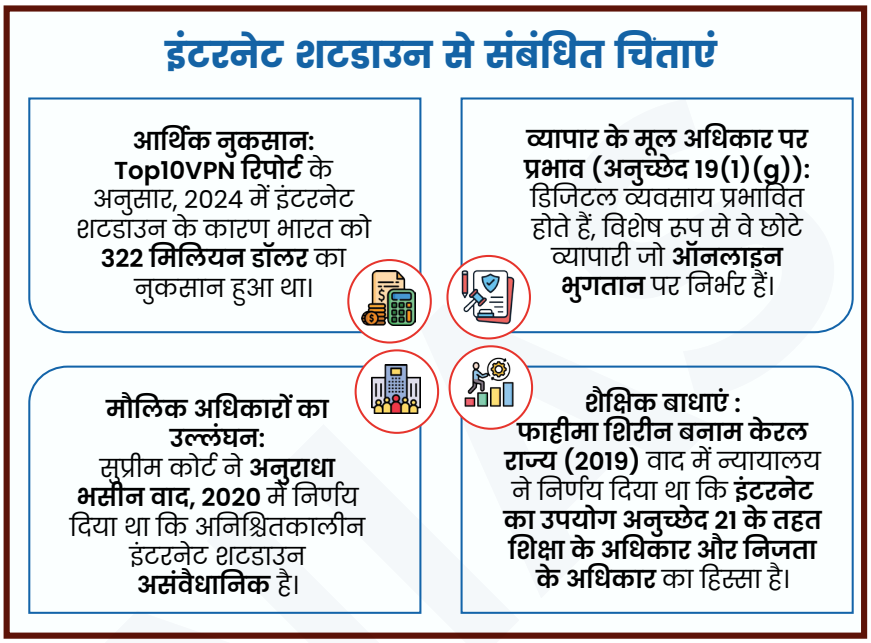

भारत में इंटरनेट शटडाउन के लिए कानूनी प्रावधान:

- **कानूनी आधार:** भारत में इंटरनेट शटडाउन **दूरसंचार अधिनियम, 2023 के तहत दूरसंचार (सेवाओं का अस्थायी निलंबन) नियम, 2024** द्वारा शासित होता है।
  - **निलंबन आदेशों के प्रकाशन को अनिवार्य बनाना:** इसमें **विस्तृत औचित्य, भौगोलिक दायरा और प्रभावित सेवाओं की जानकारी** शामिल होनी चाहिए।
    - निलंबन की **अवधि 15 दिन से अधिक नहीं** होनी चाहिए।
  - **प्राधिकरण:** आदेश केंद्र सरकार के लिए केंद्रीय गृह सचिव, या राज्य सरकार के **गृह विभाग के प्रभारी सचिव** द्वारा जारी किया जा सकता है।
- **पूर्ववर्ती CrPC की धारा 144 (भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163):** इस धारा का उपयोग अधिकारियों द्वारा प्रतिबंध लगाने के लिए किया जाता है।
- **अनुराधा भसीन वाद (2020):** सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया था कि इंटरनेट पर प्रतिबंध **अस्थायी, वैध, आवश्यक और आनुपातिक** होना चाहिए।

IIT बॉम्बे के अध्ययन में सुनामी और तटीय बाढ़ के प्रभावों को कम करने में मैंग्रोव की भूमिका को उजागर किया गया

इस अध्ययन से पता चला है कि **मैंग्रोव सहित इमर्जन्ट तटीय वनस्पति एक प्रभावी रक्षा प्रणाली** के रूप में तटीय अवसंरचना को सुनामी से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम कर देती है।

- **इमर्जन्ट वनस्पति** वे जलीय पादप होते हैं, जिनकी जड़ें जल के नीचे मिट्टी में होती हैं, जबकि उनके तने, पत्तियां और फूल पानी से ऊपर होते हैं।

मैंग्रोव के बारे में

- **मैंग्रोव**, इमर्जन्ट वृक्ष होते हैं, इनकी जड़ें जलमग्न रहती हैं। इनके तने मजबूत होते हैं, जो लहरों की प्रचंडता को कम करते हैं। इस प्रकार ये समुद्री आपदाओं के प्रति प्राकृतिक जैव-ढाल के रूप में कार्य करते हैं।
- **महत्त्व:**
  - **जल की गुणवत्ता में सुधार:** ये जल में पोषक तत्वों और तलछट को फिल्टर करके जल की गुणवत्ता को सुधारते हैं।
  - **जैव विविधता को बढ़ावा:** ये क्रैब, झींगे, मोलस्क, पक्षी, सरीसृप और स्तनधारियों के लिए नर्सरी, भोजन एवं प्रजनन स्थल प्रदान करते हैं।
  - **खाद्य एवं आजीविका सुरक्षा:** ये प्रोटीन, ओमेगा-3 फैटी एसिड, विटामिन जैसे आवश्यक पोषक तत्वों का स्रोत होते हैं। साथ ही, ये पशुओं के लिए चरागाह, ईंधन हेतु लकड़ी और चारकोल आदि के भी स्रोत होते हैं।
  - **कार्बन सिंक:** मैंग्रोव प्रति हेक्टेयर औसतन 394 टन कार्बन संग्रहित करते हैं।
- **तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा:** ये तूफान की लहरों और हवा की गति को धीमा करके तथा दिशा बदलकर, जलप्लावन की गहराई एवं प्रसार को कम करते हैं।

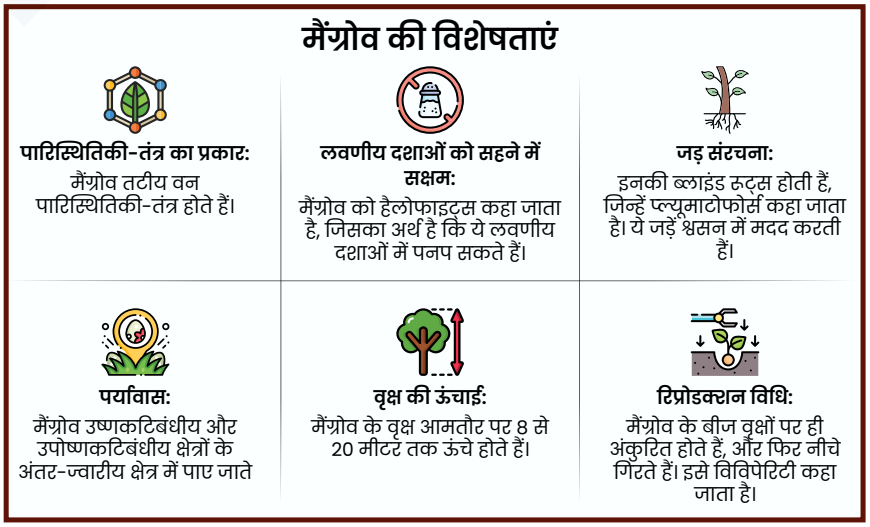

- **खतरे:** IUCN के अनुसार, **50% मैंग्रोव पारिस्थितिकी-तंत्र के नष्ट होने का खतरा है।**
  - **मुख्य खतरों में** तटीय क्षेत्रों में विकास, कृषि और झींगा पालन के लिए वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन व इसके परिणामस्वरूप समुद्र जल स्तर में वृद्धि तथा चक्रवाती तूफानों की आवृत्ति में वृद्धि शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD) ने 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए भूमि पुनर्बहाली" पर रिपोर्ट जारी की

यह रिपोर्ट इस तथ्य को रेखांकित करती है कि **साझा प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और पारिस्थितिकी-तंत्र पुनर्बहाली पर सहयोग** व्यापक राजनीतिक समझौतों का मार्ग प्रशस्त कर सकता है और यहां तक कि संघर्षों को भी रोक सकता है।

भू-निम्नीकरण (Degradation) और वैश्विक संघर्षों के बीच संबंध

- **आर्थिक अवसरों की हानि:** भू-निम्नीकरण से प्रभावित समुदाय **वस्तुओं की तस्करी, मानव तस्करी जैसी आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त** होने के लिए बाध्य हो जाते हैं।
- **खाद्य असुरक्षा:** बार-बार फसल खराब होने और मुद्रास्फीति बढ़ने से देश में राजनीतिक एवं आर्थिक अस्थिरता का खतरा बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए- **सोमालिया में संघर्ष।**
- **मानव प्रवासन:** भूमि निम्नीकरण **प्रवासन और विस्थापन** को बढ़ा सकता है।
- **असमानताओं में वृद्धि:** यह अल्पसंख्यक और सुभेद्य समूहों के हाशिए पर जाने व उनके साथ भेदभाव का कारण बन सकता है।
- **गवर्नेंस पर प्रभाव:** भूमि के प्रबंधन के मामले में कमजोर प्रशासनिक संरचनाएं संघर्ष को बढ़ा सकती हैं, जिसमें सीमा-पार विवाद भी शामिल हैं। उदाहरण: अमेज़न वर्षावन में पर्यावरणीय प्रशासन व्यवस्था कमजोर होने के कारण **ब्राजील, पेरू और कोलंबिया के बीच संघर्ष** की स्थिति देखी जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए भूमि-पुनर्बहाली का उपयोग:

- इस रिपोर्ट में संघर्ष क्षेत्रों में शांति स्थापना के उद्देश्य से **पारिस्थितिकी-तंत्र पुनर्बहाली हेतु निम्नलिखित पांच उपायों की पहचान की गई है:**
  - **तकनीकी और वैज्ञानिक सहयोग पर ध्यान केंद्रित करना:** यह साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक तटस्थ आधार तैयार कर सकता है।
  - **पक्षकारों के बीच समावेशी वार्ता:** सीमा-पार पारिस्थितिकी-तंत्र पुनर्बहाली में इसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
  - **ट्रांस-बाउंड्री गवर्नेंस व्यवस्था:** एक से अधिक देशों में फैले किसी पारिस्थितिकी-तंत्र के लिए इस तरह की गवर्नेंस व्यवस्था से विश्वास-बहाली सुनिश्चित होगी।
  - **भूमि पुनर्बहाली के लिए संघर्ष-संवेदनशील अप्रोच अपनाना:** संघर्ष के सभी पक्षकारों के हितों का सम्मान करना चाहिए। इससे विश्वास और सहयोग को बहाल करने में मदद मिलेगी।
  - **क्षमता निर्माण:** इससे संबंधित पक्षकारों के बीच सौहाद्रपूर्ण वार्ता को बढ़ावा मिलेगा।

भूमि पुनर्बहाली के लिए प्रमुख पहलें:

- **वर्टिकल क्लाइमेट फंड्स:** इस निधि से मुख्य रूप से नामित सरकारी संस्थानों, सरकारी मंत्रालयों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को वित्त-पोषण प्रदान किया जाता है।
- **कार्बन बाजार तंत्र:** इससे जुड़ी प्रमुख परियोजनाओं में वनों की कटाई रोकना, वनीकरण व पुनर्वनीकरण, बेहतर वन प्रबंधन जैसी गतिविधियां शामिल हैं।
- **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना निधि (PBF):** यह कई देशों में चलाए जाने वाले कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करती है।
- पीस फॉरेस्ट इनिशिएटिव (PFI): यह संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय (UNCCD) का एक प्रमुख कार्यक्रम है। यह संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों में पारिस्थितिकी-तंत्र पुनर्बहाली को बढ़ावा देता है।

ILO के हेड के अनुसार भारत का सामाजिक सुरक्षा कवरेज दोगुना होकर 49% हुआ

ILO की **विश्व सामाजिक सुरक्षा रिपोर्ट, 2024-26** के अनुसार भारत की जनसंख्या का वह हिस्सा जिसे कम-से-कम एक सामाजिक सुरक्षा लाभ (स्वास्थ्य को छोड़कर) मिलता है, उसकी संख्या **2021 की 24% से बढ़कर 2024 में 49%** हो गई है।

- **सामाजिक सुरक्षा** लोगों के जीवन चक्र में आने वाले जोखिमों (जैसे, बेरोजगारी, दिव्यांगता आदि) के आधार पर तथा सामान्य गरीबी और सामाजिक अपवर्जन से पीड़ित लोगों को लाभ प्रदान करती है।

सामाजिक सुरक्षा का महत्त्व

- **समावेशी समाज:** यह बच्चों, महिलाओं, वृद्धों और दिव्यांगों को सुरक्षा प्रदान करती है।
- **जलवायु अनुकूलन:** यह गरीबी, असमानता और सामाजिक अपवर्जन को कम करने में मदद कर सकती है।
- **अन्य:** यह पर्यावरण अनुकूल नौकरियों की ओर बढ़ने, संधारणीय आर्थिक पद्धतियों को अपनाने आदि को बढ़ावा देती है।

भारत में सामाजिक सुरक्षा से संबंधित चुनौतियां

- **सामाजिक सुरक्षा कवरेज:** अनौपचारिक श्रमिकों के लिए व्यापक सुरक्षा का अभाव है।
  - केवल **26% भारतीय महिलाएं** कम-से-कम एक सामाजिक सुरक्षा उपाय से कवर है, जबकि **पुरुषों के लिए यह आंकड़ा 39%** है।
- **अपर्याप्त वित्त-पोषण:** भारत **सामाजिक सुरक्षा** (स्वास्थ्य देखभाल सेवा को छोड़कर) पर GDP का केवल **5% ही खर्च** करता है, जो वैश्विक औसत (13%) **से कम** है।
- **ऑटोमेशन:** मैकिन्से की रिपोर्ट के अनुसार, AI के चलते संभावित रूप से **भारत में 2030 तक लगभग 12 मिलियन नौकरियां समाप्त** हो सकती हैं।

आगे की राह

- **सामाजिक सुरक्षा को मजबूत बनाना:** अनौपचारिक क्षेत्रक के कार्यबल को कवर करने के लिए बेरोजगारी बीमा और पेंशन योजनाओं का विस्तार करना चाहिए।
- **लैंगिक असमानताओं को दूर करना:** मातृत्व लाभ का विस्तार और पेंशन योजनाओं तक पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए।
- अधिक लाभार्थियों तक पहुंचने के लिए डेटा **संग्रह, निगरानी में सुधार और AI के दौर में रिसकिलिंग** पर बल देना चाहिए।

सामाजिक सुरक्षा के लिए उठाए गए कदम:

- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) लागू किया गया है।
- लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS) लागू की गई है।
- प्रधान मंत्री श्रम योगी मान-धन (PMSYM) योजना संचालित की जा रही है।
- प्रधान मंत्री जीवन ज्योति योजना (PMJJBY) शुरू की गई है।
- प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY) आरंभ की गई है।

अन्य सुर्ख़ियां

किशोरावस्था बालिका क्लब

मिशन शक्ति का पहला **'किशोरावस्था बालिका क्लब' नागालैंड में** शुरू किया गया।

- ऐसे किशोरावस्था बालिका क्लब 10-19 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों के लिए **सरकारी और निजी दोनों स्कूलों** में बनाए जाएंगे।

मिशन शक्ति के बारे में

- **मंत्रालय:** महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।
- **दो उप-योजनाएं:** संबल (महिलाओं की सुरक्षा के लिए) और **सामर्थ्य** (महिला सशक्तीकरण के लिए)।
  - **संबल** में वन स्टॉप सेंटर (OSC), महिला हेल्पलाइन (WHL), बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ (BBBP), और नारी अदालत शामिल हैं।
  - **सामर्थ्य** इसमें उज्ज्वला, स्वाधार गृह, कामकाजी महिला छात्रावास, कामकाजी माताओं के बच्चों के लिए राष्ट्रीय क्रेच योजना और प्रधान मंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY) शामिल हैं।

सोलिगा जनजाति

प्रधान मंत्री ने **बिलीगिरि रंगनाथ स्वामी मंदिर (BRT) टाइगर रिजर्व में बाघों की संख्या बढ़ाने में सोलिगा जनजाति** के प्रयासों की सराहना की।

सोलिगा जनजाति के बारे में

- सोलिगा एक **घुमंतू जनजाति** है, जो मुख्य रूप से **दक्षिणी कर्नाटक के बिलिगिरिरंगा पहाड़ी क्षेत्र और तमिलनाडु** के कुछ क्षेत्रों में रहती है।
- 2011 में यह **भारत की पहली जनजाति** बनी थी, जिसे किसी **टाइगर रिजर्व के अंदर कानूनी वनाधिकार** प्राप्त हुए थे।
- ये लोग जंगल से मिलने वाले प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, जैसे **शहद, जंगली फल व लकड़ी** आदि। ये **निर्वाह कृषि** भी करते हैं।
- ये लोग **सोलिगा भाषा** बोलते हैं, जो **कन्नड़ से निकटता से जुड़ी एक द्रविड़ भाषा** है।
- ये बाघों को पवित्र मानते हैं और इन्हें **'डोड्डा नाई'** कहकर पुकारते हैं।

ब्लैक प्लास्टिक

एक अध्ययन में यह बताया गया है कि ब्लैक प्लास्टिक उत्पादों में **डिकाब्रोमोडाइफेनील ईथर (BDE-209)** नामक एक **अग्निरोधी** रसायन पाया जाता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ब्लैक प्लास्टिक के बारे में

- इसे अक्सर **रिसायकल किए गए इलेक्ट्रॉनिक कचरे** जैसे कंप्यूटर, टीवी और अन्य उपकरणों से बनाया जाता है।
  - इन इलेक्ट्रॉनिक्स में आमतौर पर **अग्निरोधी ब्रोमीन, एंटिमनी और भारी धातुएं (जैसे सीसा, कैडमियम और पारा)** होते हैं।
  - ये पदार्थ और भारी धातुएं यदि इनका स्तर बहुत अधिक हो तो **मानव शरीर के लिए विषाक्त** होते हैं। अब कई देशों में इन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

भारत के विदेश मंत्री और 61 देशों के राजनयिकों ने काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान का दौरा किया।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के बारे में

- यह **असम में ब्रह्मपुत्र नदी और कार्बी (मिकिर) पहाड़ियों** के बीच स्थित है।
- **स्थिति:** यह राष्ट्रीय उद्यान, टाइगर रिजर्व, महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (IBA), और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (1985) है।
- **प्रसिद्ध:** यहां **भारतीय एक सींग वाले गैंडों** की सर्वाधिक आबादी पाई जाती है। 2022 की गणना के अनुसार **2,613** गैंडे हैं।
- **जैव विविधता:** यहां बाघ, हाथी, स्वैम्प डियर, और जंगली भैंस (बिग फोर) भी पाए जाते हैं।
- यह **प्रवासी पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि यह ऑस्ट्रेलेशिया और इंडो-एशियाई फ्लाइवे** में स्थित है।

पेलिओग्नाथे (Palaeognathae समूह के पक्षी

ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के एक नए अध्ययन ने इस धारणा को चुनौती दी है कि पेलिओग्नाथे समूह के पक्षी 'मूर्ख' होते हैं।

पेलिओग्नाथे समूह के पक्षियों के बारे में

- पेलिओग्नाथे **उड़ने में असमर्थ पक्षियों** का एक समूह है। इस समूह के पक्षियों का विकास **डायनासोर से आरंभ** हुआ था।
- इस समूह में **शुतुरमुर्ग, इमस, रियास, कैसोवरी और कीवी** जैसे पक्षी शामिल हैं।
- **वर्गीकरण:**
  - **टिनामिफोर्मेस:** उदाहरण के लिए- दक्षिण और मध्य अमेरिका के टिनमस;
    - टिनमस की **कील्ड स्टेरनम (Keeled Sternum)** होती है, जिससे **ये हल्की उड़ान भर** सकते हैं।
  - **रैटाइटे, या रैटाइट पक्षी:** इनकी स्टेर्ना सपाट होती है, पंख छोटे होते हैं और ये बिल्कुल भी नहीं उड़ सकते।
    - **इसमें शामिल हैं:**
      - अफ्रीकी शुतुरमुर्ग;
      - दक्षिण अमेरिकी का रिया;
      - ऑस्ट्रेलियाई एमु;
      - न्यू गिनी का कैसोवरी;
      - न्यूजीलैंड का कीवी आदि।

पीएम-किसान योजना

प्रधान मंत्री ने **प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के छह वर्ष पूरे होने पर किसानों को बधाई दी।**

पीएम-किसान योजना के बारे में

- **मंत्रालय:** इसे कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 2019 में शुरू किया गया था।
- **उद्देश्य:** सभी पात्र भूमिधारक कृषक परिवारों की कृषि संबंधी विविध इनपुट की खरीद में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- **लाभ:** लघु और सीमांत किसानों को **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के माध्यम से 2,000 रुपये की तीन किस्तों में प्रतिवर्ष 6,000** रुपये प्रदान किए जाते हैं।
- **लाभार्थी:** संस्थागत भूमिधारकों, उच्च आय वाले करदाताओं आदि को छोड़कर सभी भूमिधारक किसान परिवार।
- **वित्त-पोषण:** यह भारत सरकार से **100% वित्त-पोषण वाली केंद्रीय क्षेत्रक** की योजना है।

जाग्रोस पर्वत

एक हालिया अध्ययन के अनुसार, **इराक में जाग्रोस पर्वत के आसपास का पहाड़ी क्षेत्र पृथ्वी की ओर निमज्जित** हो रहा है।

- प्राचीन **नियोटेथिस महासागरीय स्लैब में दक्षिण-पूर्वी तुर्की से लेकर उत्तर-पश्चिमी ईरान** तक एक महत्वपूर्ण दरार विकसित हो रही है, जिसके कारण यह स्लैब विभाजित होकर पृथ्वी की आंतरिक परत **(मेंटल)** में निमज्जित हो रही है।

जाग्रोस पर्वत के बारे में

- **स्थान:** यह **मध्य एशिया** की प्रमुख पर्वत श्रृंखला है।
- **भौगोलिक विस्तार:** यह पर्वत श्रेणी लगभग **1,500 किलोमीटर** लंबी है, जो **पूर्वी तुर्की और उत्तर-पूर्वी इराक** के सीमावर्ती क्षेत्रों से लेकर **हारमुज जलसंधि (ईरान)** तक फैली हुई है।
- **सबसे ऊंची चोटी:** माउंट डेना।
- **जलवायु:** अर्ध-शुष्क समशीतोष्ण जलवायु।
- **वनस्पति:** शीतोष्ण **चौड़ी पत्ती वाले वन** और **स्टैपी वनस्पति।**

टी हॉर्स रोड (THR)

भारत में चीन के राजदूत ने **ऐतिहासिक टी हॉर्स रोड (THR) के बारे में एक्स (ट्विटर) पर पोस्ट** किया।

टी हॉर्स रोड (THR) के बारे में

- यह **मार्ग तिब्बत के माध्यम से भारत को चीन** से जोड़ता था। यद्यपि, यह **रेशम मार्ग** जितना प्रसिद्ध नहीं था। रेशम मार्ग चीन और यूरोप को जोड़ता था।
- यह **कोई एकल मार्ग नहीं** था, बल्कि **कई शाखाओं वाला नेटवर्क था, जो दक्षिणी-पश्चिमी चीन से शुरू होकर भारतीय उपमहाद्वीप** तक जाता था।
- दो मुख्य मार्ग **युन्नान प्रांत के डाली और लिजियांग** जैसे शहरों से होकर **तिब्बत के ल्हासा** तक जाते थे। इसके बाद ये **भारत, नेपाल और बांग्लादेश** में विभिन्न शाखाओं में बंट जाते थे।
- **उत्पत्ति:** चीन में **तांग राजवंश (618-907 ई.पू.)** के दौरान।
- यह कई **शताब्दियों तक एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग** रहा।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

जर्मनी (राजधानी: बर्लिन)

जर्मनी (राजधानी: बर्लिन)

- **फ्रेडरिक मर्ज़,** क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन ऑफ जर्मनी के नेता, **जर्मनी के नए चांसलर बनेंगे।**

जर्मनी के बारे में

- **भौगोलिक अवस्थिति:**
  - यह **मध्य यूरोप** में अवस्थित है।
  - **सीमावर्ती देश:** इसके उत्तर में **डेनमार्क,** पूर्व में **पोलैंड और चेक गणराज्य,** दक्षिण में **ऑस्ट्रिया व स्विट्जरलैंड,** तथा पश्चिम में **फ्रांस, लग्जमबर्ग, बेल्जियम एवं नीदरलैंड** स्थित हैं।
  - **सीमावर्ती जल निकाय:** इसके उत्तर में **बाल्टिक सागर और उत्तरी सागर** स्थित हैं।
- **भौगोलिक विशेषताएं:**
  - **पर्वत श्रृंखलाएं:** आल्प्स (सर्वोच्च चोटी- ज़ुगस्पिट्ज़), ब्लैक फॉरेस्ट।
  - **प्रमुख नदियां:** राइन और डेन्यूब।

अहमदाबाद बेंगलूरु भोपाल चंडीगढ़ दिल्ली गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची